

## मध्यकालीन हरियाणा (1206-1526 ई.) में शहरी प्रशासन और सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना: एक विश्लेषण

रुचि<sup>1</sup>, डॉ. सुभाष बल्हारा<sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक

<sup>2</sup> प्रोफेसर, गवर्नमेंट पी. जी. कॉलेज फॉर वुमन, रोहतक

### शोध सारांश

मध्यकालीन हरियाणा (1206-1526 ई.) में शहरीकरण के साथ-साथ शहरी प्रशासन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिलते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य इस काल में विकसित शहरी प्रशासनिक प्रणाली एवं सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। दिल्ली सल्तनत की स्थापना के पश्चात हरियाणा क्षेत्र प्रशासनिक एवं सैन्य दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया, जिसके परिणामस्वरूप यहाँ के शहर संगठित प्रशासनिक केंद्रों के रूप में विकसित हुए। इस अध्ययन में यह प्रतिपादित किया गया है कि मध्यकालीन शहरी प्रशासन केवल शासन संचालन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक संरचना एवं सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित करता था। कोतवाल, काजी एवं मुहत्सिब जैसे प्रशासनिक पदों ने शहरों में कानून-व्यवस्था, न्यायिक प्रणाली एवं बाजार नियंत्रण को व्यवस्थित किया, जिससे शहरी जीवन में स्थिरता एवं अनुशासन स्थापित हुआ। इसके साथ ही, सामाजिक संरचना में विभिन्न वर्गों—जैसे शासक वर्ग, व्यापारी, कारीगर एवं श्रमिक—का स्पष्ट विभाजन दिखाई देता है, जो आर्थिक गतिविधियों एवं प्रशासनिक नियंत्रण से प्रभावित था। सांस्कृतिक दृष्टि से मध्यकालीन हरियाणा के शहर विविध सांस्कृतिक परंपराओं के केंद्र थे, जहाँ विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान हुआ। भाषा, साहित्य, परिधान, खान-पान एवं धार्मिक जीवन में इस सांस्कृतिक समन्वय की स्पष्ट झलक मिलती है। यह अध्ययन ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से प्रशासन एवं समाज के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण किया गया है।

निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन हरियाणा में शहरी प्रशासन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थीं, तथा प्रशासनिक व्यवस्था ने सामाजिक जीवन को संरचित एवं नियंत्रित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह अध्ययन मध्यकालीन शहरी समाज की संरचना को समझने में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

**मुख्य शब्द:** शहर, प्रशासन, मध्यकालीन हरियाणा, सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक जीवन, परिवर्तन।

### प्रस्तावना

मध्यकालीन भारत (1206-1526 ई.) का कालखंड सामाजिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का युग रहा है। दिल्ली सल्तनत की स्थापना के साथ उत्तर भारत में एक केंद्रीकृत शासन व्यवस्था का विकास हुआ, जिसने न केवल राजनीतिक संरचना को परिवर्तित किया, बल्कि शहरी जीवन एवं सामाजिक संरचना

Published: 18 May 2026

DOI: <https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i5.45733>

Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

को भी गहराई से प्रभावित किया।<sup>1</sup> इस काल में शहर केवल प्रशासनिक केंद्र नहीं थे, बल्कि वे सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के सक्रिय केंद्र के रूप में विकसित हुए। हरियाणा, अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण, मध्यकाल में विशेष महत्व रखता था। दिल्ली के निकट स्थित होने के कारण यह क्षेत्र प्रशासनिक एवं सैन्य दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बन गया।<sup>2</sup> परिणामस्वरूप, यहाँ के शहर केवल व्यापारिक केंद्र ही नहीं रहे, बल्कि वे प्रशासनिक नियंत्रण एवं सामाजिक संगठन के प्रमुख केंद्र भी बन गए। इस प्रकार, हरियाणा के शहरी केंद्रों में प्रशासन एवं समाज के बीच घनिष्ठ संबंध स्थापित हुआ, जिसने शहरी जीवन की संरचना को प्रभावित किया। मध्यकालीन शहरी प्रशासन एक संगठित एवं बहुस्तरीय प्रणाली पर आधारित था, जिसमें विभिन्न अधिकारियों—जैसे कोतवाल, काजी एवं मुहत्सिब—की महत्वपूर्ण भूमिका थी। इन अधिकारियों के माध्यम से शहरों में कानून-व्यवस्था, न्यायिक प्रणाली तथा बाजार नियंत्रण को सुनिश्चित किया जाता था।<sup>3</sup> इस प्रशासनिक संरचना ने न केवल शासन संचालन को प्रभावी बनाया, बल्कि सामाजिक जीवन में अनुशासन एवं स्थिरता स्थापित करने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

सामाजिक दृष्टि से मध्यकालीन शहरों में एक स्पष्ट वर्ग संरचना दिखाई देती है, जिसमें शासक वर्ग, व्यापारी, कारीगर एवं श्रमिक वर्ग प्रमुख थे।<sup>4</sup> यह वर्ग विभाजन आर्थिक गतिविधियों एवं प्रशासनिक नियंत्रण से प्रभावित था, जिसके कारण शहरी समाज एक स्तरीकृत (stratified) रूप में विकसित हुआ। इसके अतिरिक्त, शहरों में विभिन्न समुदायों के सह-अस्तित्व के कारण सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया भी विकसित हुई, जिससे भाषा, परिधान, खान-पान एवं धार्मिक जीवन में विविधता एवं समन्वय देखने को मिलता है।

यद्यपि मध्यकालीन भारत में शहरी प्रशासन एवं सामाजिक संरचना पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन किया है, तथापि हरियाणा क्षेत्र के संदर्भ में इन दोनों आयामों का समन्वित एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम किया गया है।<sup>5</sup> अधिकांश अध्ययन या तो प्रशासनिक संरचना तक सीमित हैं या केवल सामाजिक जीवन का वर्णन करते हैं, जिससे दोनों के पारस्परिक संबंधों की स्पष्ट समझ विकसित नहीं हो पाती।

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य इसी शोध-अंतर को संबोधित करना है, जिसमें मध्यकालीन हरियाणा में शहरी प्रशासन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का समग्र एवं तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस प्रकार प्रशासनिक व्यवस्था ने सामाजिक संरचना को प्रभावित किया तथा सामाजिक जीवन ने प्रशासनिक प्रणाली को आकार दिया। यह शोध ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से शहरी प्रशासन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन के विभिन्न आयामों का अध्ययन किया गया है। इस प्रकार, यह अध्ययन मध्यकालीन हरियाणा के शहरी समाज की संरचना को समझने में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

## साहित्य समीक्षा

मध्यकालीन भारत में शहरी प्रशासन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के अध्ययन पर विभिन्न विद्वानों द्वारा अनेक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए हैं, जिनमें प्रशासनिक प्रणाली, सामाजिक वर्ग संरचना तथा सांस्कृतिक जीवन के विविध आयामों का विश्लेषण किया गया है। शहरी प्रशासन को सामान्यतः एक ऐसी संगठित प्रणाली के रूप में देखा जाता है, जिसके माध्यम से राज्य शहरों में कानून-व्यवस्था, न्याय एवं आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करता है। इस संदर्भ में ई. एच. कार (1961) ने ऐतिहासिक अध्ययन की व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट किया कि किसी भी ऐतिहासिक प्रक्रिया को समझने के लिए उसके सामाजिक एवं प्रशासनिक संदर्भों का समन्वित विश्लेषण आवश्यक है।<sup>6</sup>

दिल्ली सल्तनत के प्रशासनिक ढांचे पर नायक (2019) का अध्ययन विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिसमें उन्होंने प्रशासनिक संरचना, शासन प्रणाली एवं विभिन्न अधिकारियों की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

उनके अनुसार मध्यकालीन शहरों में कोतवाल, काजी एवं मुहत्सिब जैसे अधिकारियों की नियुक्ति के माध्यम से कानून-व्यवस्था, न्यायिक प्रणाली एवं बाजार नियंत्रण को सुनिश्चित किया जाता था।<sup>7</sup> यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि शहरी प्रशासन केवल शासन संचालन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक जीवन के संगठन एवं नियंत्रण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

सामाजिक संरचना के संदर्भ में इरफ़ान हबीब का अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। उन्होंने मध्यकालीन भारत में “Urban Revolution” की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए यह तर्क दिया कि शहरी समाज में विभिन्न वर्गों—जैसे शासक वर्ग, व्यापारी, कारीगर एवं श्रमिक—का स्पष्ट विभाजन था, जो आर्थिक एवं प्रशासनिक कारकों से प्रभावित था।<sup>8</sup> उनके अनुसार शहरी समाज एक स्तरीकृत (stratified) संरचना के रूप में विकसित हुआ, जिसमें विभिन्न वर्गों के बीच आर्थिक एवं सामाजिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।

इसी प्रकार आर. एस. शर्मा ने भी सामाजिक संरचना के अध्ययन में आर्थिक कारकों की भूमिका को महत्वपूर्ण बताया है। उनके अनुसार शहरी समाज का विकास उत्पादन प्रणाली एवं आर्थिक संसाधनों के वितरण पर निर्भर करता था, जिसके कारण सामाजिक वर्गों के बीच स्पष्ट अंतर उत्पन्न हुआ।<sup>9</sup> यह दृष्टिकोण इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि सामाजिक संरचना केवल सांस्कृतिक परंपराओं का परिणाम नहीं थी, बल्कि यह आर्थिक एवं प्रशासनिक कारकों से भी प्रभावित थी। हरियाणा क्षेत्र के संदर्भ में गोयल (2022) का अध्ययन विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिसमें उन्होंने शहरीकरण एवं शहरी तंत्र का भौगोलिक एवं आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।<sup>10</sup> उनके अनुसार हरियाणा के शहर प्रशासनिक एवं व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण केंद्र थे, जहाँ सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों का समन्वय देखने को मिलता है। इसी प्रकार शर्मा एवं कुमार (2020) ने हरियाणा में शहरी पदानुक्रम का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया कि विभिन्न शहरों में सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों के आधार पर भिन्न-भिन्न स्तर की संरचनाएँ विकसित हुईं।<sup>11</sup> सांस्कृतिक जीवन के संदर्भ में परशाद (2011) का अध्ययन विशेष महत्व रखता है, जिसमें उन्होंने मध्यकालीन हरियाणा के स्थापत्य एवं सांस्कृतिक विरासत का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार स्थापत्य संरचनाएँ केवल भौतिक निर्माण नहीं हैं, बल्कि वे उस काल के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं।<sup>12</sup> इस प्रकार, सांस्कृतिक संरचना को समझने के लिए स्थापत्य स्रोतों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक माना गया है।

उपरोक्त साहित्य के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन भारत में शहरी प्रशासन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना पर पर्याप्त अध्ययन उपलब्ध हैं, परंतु अधिकांश अध्ययन इन दोनों आयामों को अलग-अलग दृष्टिकोण से प्रस्तुत करते हैं। हरियाणा क्षेत्र के संदर्भ में इन दोनों के पारस्परिक संबंधों का समग्र एवं तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम किया गया है। यही इस शोध का प्रमुख शोध-अंतर (Research Gap) है, जिसे प्रस्तुत अध्ययन संबोधित करने का प्रयास करता है।

### शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यकालीन हरियाणा (1206–1526 ई.) के संदर्भ में शहरी प्रशासन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का अध्ययन एक समन्वित ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से किया गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य केवल घटनाओं का वर्णन प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि प्रशासनिक तंत्र एवं सामाजिक संरचना के मध्य अंतर्संबंधों का गहन विश्लेषण करना है, जिससे यह स्पष्ट किया जा सके कि किस प्रकार प्रशासनिक व्यवस्थाओं ने शहरी समाज को प्रभावित किया तथा सामाजिक प्रक्रियाओं ने प्रशासनिक संरचना को आकार प्रदान किया।

इस शोध में मुख्यतः ऐतिहासिक पद्धति (Historical Method) का उपयोग किया गया है, जिसके अंतर्गत उपलब्ध स्रोतों का क्रमबद्ध संकलन, विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है। ऐतिहासिक पद्धति के माध्यम से मध्यकाल की प्रशासनिक संस्थाओं, सामाजिक वर्ग संरचना तथा सांस्कृतिक जीवन के विकास को कालानुक्रमिक दृष्टि से समझने का प्रयास किया गया है।<sup>13</sup> इसके साथ ही विश्लेषणात्मक पद्धति (Analytical Method) का प्रयोग करते हुए प्रशासन एवं समाज के बीच संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिससे विभिन्न कारकों के प्रभाव को स्पष्ट किया जा सके। इस अध्ययन में तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis) की पद्धति को विशेष महत्व दिया गया है।

इसके अतिरिक्त, शोध में गुणात्मक विश्लेषण (Qualitative Analysis) को प्राथमिकता दी गई है, जिसके माध्यम से ऐतिहासिक तथ्यों एवं स्रोतों के आधार पर तार्किक एवं व्याख्यात्मक निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना के अध्ययन में सांस्कृतिक परंपराओं, जीवनशैली, सामाजिक वर्ग विभाजन एवं धार्मिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है, जिससे शहरी समाज की व्यापक समझ विकसित की जा सके।<sup>14</sup>

हालाँकि इस अध्ययन में विविध स्रोतों का उपयोग किया गया है, तथापि कुछ सीमाएँ भी विद्यमान हैं। मध्यकालीन काल के कई प्राथमिक स्रोत अपूर्ण या सीमित उपलब्ध हैं, जिससे कुछ निष्कर्ष आंशिक रूप से अनुमानात्मक हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, क्षेत्रीय स्तर पर सामाजिक एवं प्रशासनिक संरचना से संबंधित सांख्यिकीय आंकड़ों का अभाव भी अध्ययन की एक प्रमुख सीमा है।

### शहरी प्रशासनिक संरचना

मध्यकालीन हरियाणा (1206-1526 ई.) में शहरी प्रशासन की संरचना एक संगठित एवं बहुस्तरीय प्रणाली पर आधारित थी, जिसका उद्देश्य शहरों में कानून-व्यवस्था बनाए रखना, आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करना तथा सामाजिक जीवन को व्यवस्थित करना था। दिल्ली सल्तनत के शासनकाल में प्रशासनिक तंत्र को केंद्रीकृत स्वरूप प्रदान किया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न अधिकारियों एवं संस्थाओं के माध्यम से शहरों का संचालन किया जाता था।<sup>15</sup> इस प्रकार, शहरी प्रशासन केवल शासन संचालन का साधन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को नियंत्रित एवं संरचित करने का एक महत्वपूर्ण उपकरण भी था। मध्यकालीन शहरों में प्रशासनिक व्यवस्था का केंद्र कोतवाल (Kotwal) होता था, जो शहर में कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तरदायी था। कोतवाल का कार्य केवल अपराध नियंत्रण तक सीमित नहीं था, बल्कि वह बाजार व्यवस्था, जनसंख्या नियंत्रण तथा सार्वजनिक सुरक्षा से संबंधित कार्यों का भी संचालन करता था।<sup>16</sup> इसके अतिरिक्त, काजी (Qazi) न्यायिक अधिकारी के रूप में कार्य करता था, जो नागरिक विवादों एवं आपराधिक मामलों का निपटारा करता था। इस प्रकार, न्यायिक प्रणाली शहरी प्रशासन का एक महत्वपूर्ण अंग थी, जिसने सामाजिक जीवन में स्थिरता एवं न्याय सुनिश्चित किया।

इसी प्रकार, मुहतसिब (Muhtasib) का पद भी शहरी प्रशासन में महत्वपूर्ण था, जिसका मुख्य कार्य बाजारों की निगरानी करना तथा व्यापारिक गतिविधियों को नियंत्रित करना था। मुहतसिब यह सुनिश्चित करता था कि बाजार में वस्तुओं के मूल्य उचित रहें तथा व्यापारिक नियमों का पालन किया जाए।<sup>17</sup> इससे यह स्पष्ट होता है कि शहरी प्रशासन आर्थिक गतिविधियों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण रखता था, जिससे व्यापार एवं बाजार व्यवस्था में संतुलन बना रहता था।

शहरी प्रशासन की संरचना में कर प्रणाली (tax system) भी एक महत्वपूर्ण घटक थी। भूमि कर, व्यापारिक कर एवं बाजार शुल्क के माध्यम से राज्य अपनी आय प्राप्त करता था, जिसका उपयोग प्रशासनिक एवं सैन्य व्यय के लिए किया जाता था।<sup>18</sup> इस प्रकार, कर प्रणाली ने शहरी प्रशासन को आर्थिक आधार प्रदान किया, जिससे शहरों का विकास एवं संचालन संभव हो सका।

मध्यकालीन हरियाणा के शहरों में प्रशासनिक संरचना केवल औपचारिक संस्थाओं तक सीमित नहीं थी, बल्कि यह सामाजिक नियंत्रण का भी एक महत्वपूर्ण साधन थी। प्रशासनिक अधिकारियों के माध्यम से सामाजिक व्यवहारों, नैतिक मानकों एवं सांस्कृतिक परंपराओं को भी नियंत्रित किया जाता था। इससे शहरी समाज में अनुशासन एवं व्यवस्था बनी रहती थी। विशेष रूप से, दिल्ली सल्तनत के शासकों द्वारा अपनाई गई नीतियों—जैसे अलाउद्दीन खिलजी की मूल्य नियंत्रण नीति—ने शहरी प्रशासन को और अधिक सुदृढ़ किया।<sup>19</sup> इन नीतियों के माध्यम से बाजार व्यवस्था को नियंत्रित किया गया तथा आर्थिक असमानताओं को कम करने का प्रयास किया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रशासनिक नीतियाँ केवल शासन तक सीमित नहीं थीं, बल्कि वे सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को भी प्रभावित करती थीं।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मध्यकालीन हरियाणा में शहरी प्रशासन एक सुव्यवस्थित एवं संगठित प्रणाली थी, जिसने न केवल शासन संचालन को प्रभावी बनाया, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को भी नियंत्रित एवं संरचित किया। यह प्रशासनिक ढाँचा शहरीकरण की प्रक्रिया को स्थायित्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था तथा शहरों को संगठित शहरी केंद्रों के रूप में विकसित करने में सहायक सिद्ध हुआ।

### शहरी समाजिक संरचना

मध्यकालीन हरियाणा (1206–1526 ई.) के शहरों में सामाजिक संरचना एक बहुस्तरीय एवं स्तरीकृत (stratified) स्वरूप में विकसित हुई थी, जिसमें विभिन्न सामाजिक वर्गों का स्पष्ट विभाजन दिखाई देता है। यह संरचना केवल सामाजिक परंपराओं का परिणाम नहीं थी, बल्कि यह आर्थिक गतिविधियों, प्रशासनिक नियंत्रण एवं राजनीतिक सत्ता के प्रभाव से निर्मित हुई थी। दिल्ली सल्तनत के शासनकाल में शहरी समाज में विभिन्न वर्गों—जैसे शासक वर्ग, व्यापारी, कारीगर एवं श्रमिक—का विकास हुआ, जो अपने-अपने कार्यों एवं सामाजिक स्थिति के आधार पर भिन्न-भिन्न स्तरों पर स्थित थे।<sup>20</sup> शहरी समाज में शासक वर्ग सर्वोच्च स्थान पर था जिसमें सुल्तान, अमीर, उमरा एवं प्रशासनिक अधिकारी सम्मिलित थे। यह वर्ग राजनीतिक सत्ता एवं प्रशासनिक नियंत्रण का केंद्र था, जिसके माध्यम से शासन व्यवस्था संचालित होती थी।<sup>21</sup> इस वर्ग का जीवन स्तर उच्च था तथा यह वर्ग सामाजिक प्रतिष्ठा एवं आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखता था।

इसके पश्चात व्यापारी वर्ग (Merchant Class) का स्थान था, जो शहरी अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग था। व्यापारिक गतिविधियों के विस्तार के कारण इस वर्ग का आर्थिक महत्व अत्यधिक बढ़ गया था। व्यापारी वर्ग न केवल स्थानीय बाजारों में सक्रिय था, बल्कि यह अंतर-क्षेत्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय व्यापार नेटवर्क का भी हिस्सा था।<sup>22</sup> इस वर्ग के पास पर्याप्त आर्थिक संसाधन थे, जिससे इसकी सामाजिक स्थिति भी सुदृढ़ थी। कारीगर एवं शिल्पकार वर्ग (Artisans and Craftsmen) शहरी समाज का एक महत्वपूर्ण कार्यकारी वर्ग था, जो वस्त्र निर्माण, धातु शिल्प, कुटीर उद्योग एवं अन्य उत्पादन गतिविधियों से जुड़ा हुआ था। यह वर्ग उत्पादन प्रणाली का आधार था, जिसके बिना शहरी अर्थव्यवस्था का संचालन संभव नहीं था।<sup>23</sup> हालांकि इनका आर्थिक योगदान महत्वपूर्ण था, फिर भी इनकी सामाजिक स्थिति व्यापारी एवं शासक वर्ग की तुलना में निम्न मानी जाती थी। इसके अतिरिक्त, श्रमिक वर्ग (Labour Class) शहरी समाज का निम्नतम स्तर था, जो विभिन्न प्रकार के शारीरिक कार्यों में संलग्न था। यह वर्ग आर्थिक रूप से कमजोर था तथा सामाजिक दृष्टि से भी निम्न स्थिति में स्थित था।<sup>24</sup> इस प्रकार, शहरी समाज में वर्गीय असमानता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो आर्थिक संसाधनों के असमान वितरण का परिणाम थी। मध्यकालीन हरियाणा के शहरी समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता ग्रामीण-शहरी संबंध (Rural-Urban Relationship) थी। शहरों का विकास ग्रामीण क्षेत्रों से प्राप्त संसाधनों पर निर्भर था, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों को शहरी बाजारों एवं प्रशासनिक संरचना से लाभ प्राप्त होता था।<sup>25</sup> इस प्रकार, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के बीच एक परस्पर निर्भर संबंध

स्थापित हुआ, जिसने शहरी समाज की संरचना को प्रभावित किया। इसके अतिरिक्त, शहरी समाज में विभिन्न समुदायों एवं संस्कृतियों का सह-अस्तित्व भी देखने को मिलता है। विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक समूहों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया ने शहरी समाज को विविधतापूर्ण एवं गतिशील स्वरूप प्रदान किया। यह सामाजिक समन्वय शहरी जीवन की एक महत्वपूर्ण विशेषता थी, जिसने सांस्कृतिक विकास को भी प्रभावित किया।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मध्यकालीन हरियाणा का शहरी समाज एक जटिल एवं स्तरीकृत संरचना पर आधारित था, जिसमें विभिन्न वर्गों के बीच स्पष्ट विभाजन होने के बावजूद उनके बीच परस्पर निर्भरता भी विद्यमान थी। यह सामाजिक संरचना आर्थिक, प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक कारकों के संयुक्त प्रभाव से विकसित हुई, जिसने शहरी जीवन को संगठित एवं संरचित रूप प्रदान किया।

### सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन

मध्यकालीन हरियाणा (1206-1526 ई.) के शहरों में सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन एक बहुआयामी एवं गतिशील स्वरूप में विकसित हुआ था, जो विभिन्न सामाजिक वर्गों, धार्मिक समुदायों एवं सांस्कृतिक परंपराओं के परस्पर समन्वय का परिणाम था। शहरी समाज केवल आर्थिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान, जीवनशैली एवं सामाजिक व्यवहारों का भी केंद्र था।<sup>26</sup> शहरी जीवन में आवासीय संरचना एवं जीवनशैली का विशेष महत्व था। उच्च वर्ग के लोग विशाल एवं सुदृढ़ भवनों में निवास करते थे, जबकि निम्न वर्ग के लोग साधारण आवासों में रहते थे। इस प्रकार, आवासीय व्यवस्था सामाजिक वर्ग विभाजन को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती थी।<sup>27</sup> शहरी जीवन में स्वच्छता, जल आपूर्ति एवं सार्वजनिक सुविधाओं का भी महत्व था, जो प्रशासनिक व्यवस्था द्वारा नियंत्रित होती थीं। खान-पान (Food Habits) के संदर्भ में मध्यकालीन हरियाणा का शहरी समाज विविधता से परिपूर्ण था। विभिन्न सामाजिक एवं धार्मिक समूहों के प्रभाव के कारण भोजन में अनाज, दालें, मांस, दूध एवं अन्य खाद्य पदार्थों का उपयोग किया जाता था।<sup>28</sup> यह विविधता शहरी समाज की सांस्कृतिक बहुलता को दर्शाती है। वस्त्र एवं आभूषण (Dress and Ornaments) भी सामाजिक स्थिति एवं सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण संकेतक थे। उच्च वर्ग के लोग महंगे एवं अलंकृत वस्त्र धारण करते थे, जबकि सामान्य वर्ग के लोग साधारण वस्त्र पहनते थे। आभूषणों का उपयोग विशेष रूप से महिलाओं एवं उच्च वर्ग के लोगों में अधिक प्रचलित था।<sup>29</sup> इस प्रकार, वस्त्र एवं आभूषण सामाजिक स्तरीकरण को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

मनोरंजन एवं अवकाश (Entertainment and Leisure) के साधनों में भी विविधता देखने को मिलती है। लोक मनोरंजन, संगीत, नृत्य, खेल एवं दरबारी मनोरंजन के विभिन्न रूप शहरी जीवन का हिस्सा थे।<sup>30</sup> यह मनोरंजन न केवल सामाजिक जीवन को जीवंत बनाता था, बल्कि सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। महिलाओं की स्थिति (Status of Women) मध्यकालीन शहरी समाज में एक जटिल विषय था। महिलाओं की सामाजिक स्थिति उनके वर्ग, परिवार एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के अनुसार भिन्न-भिन्न थी। उच्च वर्ग की महिलाओं को अपेक्षाकृत अधिक सुविधाएँ प्राप्त थीं, जबकि निम्न वर्ग की महिलाएँ आर्थिक एवं सामाजिक सीमाओं से बंधी हुई थीं।<sup>31</sup> इसके बावजूद, महिलाओं की भूमिका पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण थी। मध्यकालीन हरियाणा के शहरी समाज की एक महत्वपूर्ण विशेषता विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक समन्वय (Cultural Interaction) थी। हिंदू एवं मुस्लिम समुदायों के सह-अस्तित्व के कारण सांस्कृतिक परंपराओं, भाषा, संगीत एवं जीवनशैली में एक प्रकार का मिश्रण देखने को मिलता है।<sup>32</sup> यह सांस्कृतिक समन्वय शहरी समाज को एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मध्यकालीन हरियाणा का सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन अत्यंत विविधतापूर्ण एवं गतिशील था, जिसमें विभिन्न सामाजिक वर्गों एवं सांस्कृतिक परंपराओं का समन्वय स्पष्ट रूप से

दिखाई देता है। यह जीवनशैली न केवल सामाजिक संरचना को प्रभावित करती थी, बल्कि शहरी प्रशासन एवं आर्थिक गतिविधियों के साथ भी गहराई से जुड़ी हुई थी।

### धर्म एवं संस्कृति

मध्यकालीन हरियाणा (1206–1526 ई.) के शहरी जीवन में धर्म एवं संस्कृति का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था, जिसने सामाजिक संरचना, जीवनशैली एवं प्रशासनिक व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया। इस काल में शहर केवल आर्थिक एवं प्रशासनिक केंद्र ही नहीं थे, बल्कि वे धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के भी प्रमुख केंद्र थे, जहाँ विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया निरंतर चलती रही।<sup>33</sup>

धार्मिक दृष्टि से मध्यकालीन हरियाणा में हिंदू एवं मुस्लिम समुदायों का सह-अस्तित्व देखने को मिलता है। दिल्ली सल्तनत के शासनकाल में इस्लाम का प्रभाव बढ़ा, जिसके परिणामस्वरूप मस्जिदों, दरगाहों एवं अन्य धार्मिक संस्थानों का विकास हुआ।<sup>34</sup> साथ ही, हिंदू धार्मिक परंपराएँ भी समान रूप से प्रचलित रहीं, जिनमें मंदिर, तीर्थस्थल एवं धार्मिक अनुष्ठानों का महत्वपूर्ण स्थान था। इस प्रकार, धार्मिक विविधता ने शहरी समाज को एक बहुलतावादी (pluralistic) स्वरूप प्रदान किया। इस काल में सूफी एवं भक्ति आंदोलनों का प्रभाव भी उल्लेखनीय था, जिसने धार्मिक सहिष्णुता एवं सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा दिया। सूफी संतों एवं भक्ति संतों ने सामाजिक समरसता एवं आध्यात्मिक एकता का संदेश दिया, जिससे विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच आपसी संबंध सुदृढ़ हुए।<sup>35</sup> यह आंदोलन शहरी समाज के सांस्कृतिक विकास में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभरे। भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में भी मध्यकालीन हरियाणा में उल्लेखनीय विकास हुआ। फारसी भाषा प्रशासनिक एवं आधिकारिक भाषा के रूप में प्रचलित थी, जबकि स्थानीय स्तर पर हिंदी एवं अन्य बोलियों का उपयोग किया जाता था।<sup>36</sup> इस भाषाई विविधता ने सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को समृद्ध किया तथा साहित्यिक परंपराओं को विकसित किया।

सांस्कृतिक जीवन में परंपराएँ, उत्सव एवं रीति-रिवाज भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे। विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक उत्सव—जैसे पर्व, मेलों एवं धार्मिक अनुष्ठानों—के माध्यम से शहरी समाज में सांस्कृतिक एकता एवं सामूहिकता की भावना विकसित होती थी।<sup>37</sup> ये गतिविधियाँ न केवल सामाजिक जीवन को सक्रिय बनाती थीं, बल्कि सांस्कृतिक पहचान को भी सुदृढ़ करती थीं। मध्यकालीन हरियाणा के शहरी जीवन में स्थापत्य एवं कला भी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के महत्वपूर्ण माध्यम थे। किले, मस्जिदें, सराय एवं अन्य स्थापत्य संरचनाएँ उस काल की सांस्कृतिक एवं तकनीकी प्रगति को दर्शाती हैं। परशाद के अनुसार ये स्थापत्य संरचनाएँ उस समय के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब प्रस्तुत करती हैं।<sup>38</sup>

इस प्रकार, मध्यकालीन हरियाणा में धर्म एवं संस्कृति एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे तथा उन्होंने शहरी समाज के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। धार्मिक विविधता एवं सांस्कृतिक समन्वय ने शहरी जीवन को एक विशिष्ट एवं समृद्ध स्वरूप प्रदान किया, जो प्रशासनिक एवं सामाजिक संरचना के साथ मिलकर एक संगठित शहरी प्रणाली के रूप में विकसित हुआ।

### प्रशासन एवं समाज का पारस्परिक संबंध

मध्यकालीन हरियाणा (1206–1526 ई.) में शहरी जीवन की संरचना को समझने के लिए प्रशासन एवं समाज के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि ये दोनों तत्व एक-दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए थे तथा एक-दूसरे को निरंतर प्रभावित करते थे। शहरी प्रशासन केवल शासन संचालन का साधन नहीं था, बल्कि यह सामाजिक जीवन को संरचित, नियंत्रित एवं दिशा प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण तंत्र था।<sup>39</sup> प्रशासनिक व्यवस्था के माध्यम से शहरी समाज में कानून-व्यवस्था, न्यायिक प्रणाली एवं आर्थिक गतिविधियों का नियमन किया जाता

था। कोतवाल, काजी एवं मुहतसिब जैसे अधिकारियों के द्वारा सामाजिक व्यवहारों, बाजार व्यवस्था एवं नैतिक मानकों को नियंत्रित किया जाता था, जिससे समाज में अनुशासन एवं स्थिरता बनी रहती थी।<sup>40</sup> इस प्रकार, प्रशासन ने सामाजिक जीवन के संगठन में प्रत्यक्ष भूमिका निभाई तथा सामाजिक संरचना को एक निश्चित ढाँचे में व्यवस्थित किया।

दूसरी ओर, सामाजिक संरचना भी प्रशासनिक व्यवस्था को प्रभावित करती थी। शहरी समाज में विभिन्न वर्गों—जैसे शासक वर्ग, व्यापारी, कारीगर एवं श्रमिक—की उपस्थिति ने प्रशासनिक नीतियों एवं निर्णयों को प्रभावित किया।<sup>41</sup> उदाहरणस्वरूप, व्यापारी वर्ग की आर्थिक शक्ति के कारण प्रशासन को बाजार नियंत्रण एवं व्यापारिक नीतियों में संतुलन बनाए रखना पड़ता था, जबकि श्रमिक वर्ग की आवश्यकताओं ने श्रम एवं उत्पादन से संबंधित नीतियों को प्रभावित किया। इस प्रकार, प्रशासन केवल ऊपर से थोपा गया तंत्र नहीं था, बल्कि यह समाज की आवश्यकताओं एवं संरचना के अनुसार विकसित हुआ।

प्रशासन एवं समाज के इस पारस्परिक संबंध में आर्थिक कारकों की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी। शहरी प्रशासन द्वारा लागू की गई कर प्रणाली एवं बाजार नियंत्रण नीतियाँ सीधे तौर पर सामाजिक वर्गों को प्रभावित करती थीं।<sup>42</sup> इससे सामाजिक असमानताओं में परिवर्तन आता था तथा विभिन्न वर्गों के बीच संबंधों का स्वरूप निर्धारित होता था। इसी प्रकार, सामाजिक संरचना में मौजूद वर्गीय विभाजन ने प्रशासनिक संसाधनों के वितरण को प्रभावित किया। मध्यकालीन हरियाणा के शहरों में सांस्कृतिक जीवन भी प्रशासन एवं समाज के संबंधों का एक महत्वपूर्ण आयाम था। प्रशासनिक नीतियों के माध्यम से धार्मिक संस्थानों, सांस्कृतिक परंपराओं एवं सामाजिक व्यवहारों को नियंत्रित एवं संरक्षित किया जाता था।<sup>43</sup> इसके साथ ही, विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने प्रशासनिक व्यवस्था को भी प्रभावित किया, जिससे शासन में सहिष्णुता एवं समन्वय की प्रवृत्ति विकसित हुई।

### निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध पत्र में मध्यकालीन हरियाणा (1206–1526 ई.) के शहरी प्रशासन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस काल में शहरी जीवन एक सुव्यवस्थित एवं संगठित प्रणाली के रूप में विकसित हुआ, जिसमें प्रशासनिक तंत्र एवं सामाजिक संरचना के बीच गहरा एवं परस्पर निर्भर संबंध विद्यमान था।

शहरी प्रशासन की दृष्टि से दिल्ली सल्तनत की केंद्रीकृत शासन प्रणाली ने शहरों में कानून-व्यवस्था, न्यायिक व्यवस्था एवं बाजार नियंत्रण को सुदृढ़ किया। कोतवाल, काजी एवं मुहतसिब जैसे प्रशासनिक अधिकारियों के माध्यम से शहरी जीवन को संगठित एवं नियंत्रित किया गया, जिससे सामाजिक स्थिरता एवं अनुशासन स्थापित हुआ।<sup>44</sup> इस प्रकार, प्रशासनिक संरचना ने शहरी समाज को एक निश्चित दिशा एवं स्वरूप प्रदान किया।

सामाजिक संरचना के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि मध्यकालीन हरियाणा का शहरी समाज एक स्तरीकृत (stratified) संरचना पर आधारित था, जिसमें विभिन्न वर्गों—जैसे शासक वर्ग, व्यापारी, कारीगर एवं श्रमिक—के बीच स्पष्ट विभाजन दिखाई देता है।<sup>45</sup> यह वर्गीय विभाजन आर्थिक संसाधनों एवं प्रशासनिक नियंत्रण से प्रभावित था, जिसके कारण सामाजिक असमानताएँ भी विद्यमान थीं।

सांस्कृतिक दृष्टि से मध्यकालीन हरियाणा के शहर विविध सांस्कृतिक परंपराओं एवं धार्मिक समुदायों के समन्वय का केंद्र थे। हिंदू एवं मुस्लिम समुदायों के सह-अस्तित्व तथा सूफी एवं भक्ति आंदोलनों के प्रभाव के कारण सांस्कृतिक समन्वय एवं सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिला।<sup>46</sup> इस प्रकार, सांस्कृतिक जीवन ने शहरी समाज को एक विशिष्ट एवं गतिशील स्वरूप प्रदान किया। प्रशासन एवं समाज के पारस्परिक संबंधों के विश्लेषण से यह निष्कर्ष

निकलता है कि दोनों के बीच एक द्विदिशात्मक संबंध विद्यमान था, जिसमें प्रशासन ने सामाजिक संरचना को नियंत्रित एवं व्यवस्थित किया, जबकि सामाजिक प्रक्रियाओं ने प्रशासनिक नीतियों एवं निर्णयों को प्रभावित किया। इस प्रकार, शहरी जीवन का विकास प्रशासन एवं समाज के संयुक्त प्रभाव का परिणाम था। समग्रतः यह अध्ययन यह स्थापित करता है कि मध्यकालीन हरियाणा में शहरी प्रशासन एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना एक-दूसरे से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए थे तथा दोनों के समन्वय से एक संगठित एवं विकसित शहरी प्रणाली का निर्माण हुआ। यह निष्कर्ष न केवल मध्यकालीन शहरी समाज की समझ को सुदृढ़ करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि शहरी विकास की प्रक्रिया को समझने के लिए प्रशासनिक एवं सामाजिक दोनों आयामों का संयुक्त अध्ययन आवश्यक है।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. नायक, गणेश्वर, *मध्यकालीन भारत का राजनीतिक एवं प्रशासनिक इतिहास*, नई दिल्ली: मित्तल पब्लिकेशन. 2019, पृ. 2.
2. गोयल, संजीव, *हरियाणा में शहरीकरण एवं शहरी तंत्र*, नई दिल्ली: राजेश पब्लिकेशन. 2022, पृ. 24.
3. इग्नू (IGNOU), *मध्यकालीन भारत में शहरी केंद्र*, यूनिट 20, पृ. 100.
4. हबीब, इरफान, *मध्यकालीन भारत: एक अध्ययन*, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. 1982, पृ. 45.
5. मिश्रा, ए. सी. *भारत का शहरी इतिहास*, नई दिल्ली: अर्जुन पब्लिशिंग हाउस. पृ. 78.
6. कार, ई. एच., *इतिहास क्या है?*, पेंगुइन बुक्स, 1961, पृ. 23.
7. नायक, गणेश्वर, *मध्यकालीन भारत का राजनीतिक एवं प्रशासनिक इतिहास*, नई दिल्ली: मित्तल पब्लिकेशन. 2019, पृ. 2.
8. हबीब, इरफान, *मध्यकालीन भारत: एक अध्ययन*, नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन. 1982, पृ. 45.
9. शर्मा, आर. एस., *भारत में शहरी पतन*, नई दिल्ली: अब राजकमल प्रकाशन. 1987, पृ. 112.
10. गोयल, संजीव, *हरियाणा में शहरीकरण एवं शहरी तंत्र*, नई दिल्ली : राजेश पब्लिकेशन. 2022, पृ. 24.
11. शर्मा, मंजू एवं कुमार, संदीप, *हरियाणा का शहरी पदानुक्रम*, 2020, पृ. 2.
12. परशाद, जगदीश, *मेडीवल मॉन्यूमेंट्स इन इंडिया: ए हिस्टोरिकल एंड आर्किटेक्ट स्टडी इन हरियाणा*. नई दिल्ली: आगां खान प्रकाशन, 2011.
13. कार, ई. एच., *इतिहास क्या है?*, पेंगुइन बुक्स, 1961, पृ. 23.
14. परशाद, जगदीश, *मेडीवल मॉन्यूमेंट्स इन इंडिया: ए हिस्टोरिकल एंड आर्किटेक्ट स्टडी इन हरियाणा*. नई दिल्ली: आगां खान प्रकाशन, 2011.
15. इग्नू (IGNOU), *मध्यकालीन भारत में शहरी केंद्र*, यूनिट 20, पृ. 100.
16. इग्नू (IGNOU), *मध्यकालीन भारत में शहरी केंद्र*, यूनिट 20, पृ. 100.
17. इग्नू (IGNOU), पूर्वोक्त (ibid.)
18. नायक, गणेश्वर, पूर्वोक्त (ibid.)
19. हबीब, इरफान, पूर्वोक्त, पृ. 45.
20. नायक, गणेश्वर, पूर्वोक्त, पृ. 2.
21. गोयल, संजीव, पूर्वोक्त, पृ. 24.
22. खन्ना, रवि, *मध्यकालीन हरियाणा क्षेत्र में औद्योगिक विकास*. नई दिल्ली: हरियाणा पब्लिकेशन, पृ. 1.
23. शर्मा, आर. एस. पूर्वोक्त, पृ. 112.
24. इग्नू (IGNOU), *मध्यकालीन भारत में शहरी केंद्र*, यूनिट 20.
25. इग्नू (IGNOU), वही, पृ. 100.

26. गोयल, संजीव, पूर्वोक्त, पृ. 24.
27. हबीब, इरफान, पूर्वोक्त, पृ. 45.
28. परशाद, जगदीश, पूर्वोक्त।
29. शर्मा, आर. एस., पूर्वोक्त, पृ. 112.
30. नायक, गणेश्वर, पूर्वोक्त, पृ. 2.
31. इग्रू (IGNOU), पूर्वोक्त (ibid.)
32. इग्रू (IGNOU), वही, पृ. 100.
33. नायक, गणेश्वर, पूर्वोक्त, पृ. 2.
34. हबीब, इरफान, पूर्वोक्त, पृ. 45.
35. गोयल, संजीव, पूर्वोक्त, पृ. 24.
36. शर्मा, आर. एस. पूर्वोक्त, पृ. 112.
37. परशाद, जगदीश, पूर्वोक्त, 2011.
38. नायक, गणेश्वर, *मध्यकालीन भारत का राजनीतिक एवं प्रशासनिक इतिहास*, 2019, पृ. 2.
39. इग्रू (IGNOU), पूर्वोक्त, पृ. 100.
40. हबीब, इरफान, पूर्वोक्त, पृ. 45.
41. खन्ना, रवि, पूर्वोक्त, पृ. 2.
42. परशाद, जगदीश, *मेडीवल मॉन्यूमेंट्स इन इंडिया*, 2011.
43. नायक, गणेश्वर, पूर्वोक्त, पृ. 2.
44. हबीब, इरफान, पूर्वोक्त, पृ. 45.
45. इग्रू (IGNOU), पूर्वोक्त, पृ. 100.
46. शर्मा, आर. एस., पूर्वोक्त, पृ. 112.